

झुलसा हुआ मैं

(कविता संग्रह)

झुलसा हुआ मै

निशान्त

स्वस्ति साहित्य सदन

रानी बाजार, बीकानेर 334001

प्रवाशय स्वस्ति साहित्य सदन, रानी बाजार बीकानेर 334001/
मुद्रक एस० एन० प्रिंटस नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032 /
संस्करण प्रथम 1983 / आवरण सनू / मूल्य बीस
रुपये मात्र ।

JHULSA HUA MEN (Pomes) NISHANT

Price 20/-

प्रस्तुति से पूर्व एक पाठकीय साक्ष्य

लघु पत्रिकाओं के माध्यम से लम्बे समय से मैं कवि निशान्त से परिचित रहा हूँ, सीधे साक्षात्कार से पूर्व उनका आग्रह मुझ तक पहुँचा कि मैं उनके पहले काव्य संग्रह का पहला पाठक बनूँ, उनका यह आग्रह मुझे बहुत निकट का तो लगा ही और इस अर्थ में साधक भी कि काव्य-कर्म में निरन्तर जुड़े रहने का अर्थ निरन्तर कविता पढ़ते रहने से भी है।

लघु पत्रिकाओं में दखा हुआ उनका छायाभास संग्रह के साथ अपने समग्र रूप में मेरे सामने है, डेढ़ दशक की उनकी काव्य यात्रा को उसके बाहर भीतर सहित देखने की मैंने चेष्टा की है—

“आकाश जैसा था / वैसा ही रहा / वे इसमें कोई /

सुनहरा रंग नहीं भर पाए लेकिन ”

“मुझे उन सब चेहरों का पता है / जहाँ बसत नहा है ”

“शेर उनकी जात है / और बकरी उनकी औकात /

लेकिन उहान सदा ही / अपनी औकात की भुलाया है /

जात को बचाया है ”

“मुठिया तन कर खुल जाती है ”

“और फूट पड़ता है होठा का एक छाला ”

“मैं कोठरी में स खिचकी बना लूंगा ”

पर्याप्त है ये कविता पकितियाँ कि मैं यह कहूँ कि निशान्त इतने सहज कवि हैं कि शिल्प उनके यहाँ कोई बहुत बड़ा अर्थ नहीं रखता, इस कारण उनसे कहीं कहीं कविता की लय भी छूट गई सी लगती है पर इस छूटने में उनके हाथ जो लगा वह भारी है, 'वह' के भार को देखते हुए कविता की लय और उसकी दिशा को एक बारगी तो अलग रखा ही जा सकता है यह वह उनकी भाषा है जिसे निशान्त कस्बई गलियो भूषा खेता की पगडंडियों और निम्न मध्यवर्त्तीय परिवेश के बोलते हुए आगम से उठाया है, उनकी भाषा महानगर की जानती है पर उसकी भागम भाग से बोझिल नहीं हुई है, वह अपने रचनाकार के साथ उससे सगुस्त भी नहीं हुई है कि दखे और कतरा जाए या फिर भाग छूटने के असफल जतन करे।

निशान्त की कविता की भाषा अपने आप में एक प्रमाण है कि रचनाकार रचना के माध्यम से अपने परिवेश से सरोकार बनाए रखने की चिन्ता में है, रचना उसके लिए 'कला' और 'सौंदर्य' बाद में है, पहले, वह उसकी, उसके अपने परि-

वेष की जो उससे, उस जस समूह से बना है और व सारे ऊर्जा के व भी उसी में निहित हैं जो उसे गति देते हैं--आकुलता की, व्यक्त होने की चेष्टा की 'वाणा' है।

यह मुख की बात है कि निशांत में वायवीय वारणा के दबाव से उपजा अपनी प्रतिक्रिया को मात्र आवेग के शब्द में नहीं उछाला है वही धवा है तो स्वीकार भी किया है। कस्बई सस्कारा न अभी तक अपने प्राजल भापा स्वरूप को पूरी तरह नहीं छोड़ा है, निशांत भी उही सस्कारा के अंश है, वही वही वह प्राजलता भी आई है पर वह गतिमा छोटी सड़का धक्का बस्तिया कच्चे मकान से निकली भापा में खनी नहीं है।

भापा का यह रचना रूप पाठक को आश्चर्य करता है कि यह भापा अपनी रचनात्मक क्षमताओं का विस्तार देने की दिशा में निरी आकुलता व साथ प्रयत्नशील है। परिवेश से मिलनी पीडा और शोभ ने रचनाकार को 'कोरे आदश, घडते रहने से तो अलग किया ही है अपने आज को देखते छानते, उसकी आवश्यक्ता की ही जुबान में अनागत को आकार देने का सपना भी दिया है।

मैं श्री निशांत के इस सग्रह को अपनत्व देता हुआ कामना करता हूँ कि काव्य-यात्रा का उनका अगला पड़ाव वन भापा रूप के सहारे नए रचनात्मक आयाम देने वाला होगा।

मुझे रचनाकार ने पहला पाठक होने का अवसर दिया, उनके इस अपनत्व के प्रति मेरी शुभेच्छा।

—हरीश भादानी

अनुक्रम

भूत भविष्य वर्तमान	9
क्षमता सिकुडन और विस्तार	11
आदमी	13
मैंने देखा है	14
यह अस्वस्थ हवा	15
एक और महाप्रलय	18
किसी एक दिन मैं	20
पराजित	23
विकल्प	25
यही चाहिए था	26
विक्षत	27
आत्महत्या की जगह	29
स्वभाव	30
वर्षा के बाद रेगिस्तान	31
खेल ! मेरे बेटे ! खेल !	32
मेरी पीड़ा	33
यह नहीं चलेगा	34
दो स्थितियाँ	35
आजकल	36
उसकी सीट	37
एक बार फिर	38
बश-बीज	39
नहे मजूर	40
एक भूमिहीन की व्यथा	41
फिर वही	42
छीका टूटा	43
सोमो की तीव्र सहजताएँ	44
होने की विवशता	45
एक चित्र	47
आकाश में	48

अथ के बिना	49
यह सब	50
बसत	52
विडम्बना और विडम्बना	53
निम्न तबके की बस्ती	54
आस्था	55
अजूबा	56
तुम्हारे भले ता	57
घक्का बस्ती	58
क्वच्चा घर वर्षा के बाद	61
नया साल	62
नया	63
भ्राति कथा	64
अस्तित्वपूर्ण मैं	66
गुस्से का बारण	67
राम	68
दृश्य	69
निष्ठा	70
खलकत जाग जाएगी तो	71
यथास्थिति बनाए रखने वाला स	72
अस्सी की उपलब्धि	73
गजब हो जाता	74
अधभक्ति	75
समझदारी	76
ऊब और उत्साह	77
लोगा ने	78
भ्रम और बदनियत का भ्रूण	79
पालन	80

भूत, भविष्य और वर्तमान

अतीत वे वे दिन
जिन्हें मैंने
दुर्दिन के चिह्न स
चिह्नित कर दिया था
भयकर वर्तमान से तमाचै खाकर
आज मैं उ-ह
सु दिनों की सजा दे रहा हू
इससे स्पष्ट है
भविष्य और भी घना
अधवारमय होगा
और मुझे फिर अपने इस
आज के वर्तमान के प्रति अपनी
घारणा बदलनी पड़ेगी
इससे एक शिक्षा भी है
कि आज के इस वर्तमान को
चाहे वह यथाथ मे कसा ही है
एक सुनहरा अवसर मान लू
और इस सत्य को पहचान लू
कि कहीं भी चला जाऊ, चाह
मुझे हमेशा एक
सीमाहीन भीड़ घेरे रहेगी
और एक शून्य से अधिक
कुछ नहीं होगा
मेरा अस्तित्व

ऐसे म अच्छा ही है
अगर मुझको नहीं होता
अपनी असफलताओं
पर अफसोस !
और हृदय में
घड़कन की जगह
अगर बचा हुआ है
मात्र एक अहसास !

क्षमता सिकुडन और विस्तार

घर म पड़े पड़े
मेरे भीतर
एक बबडर उठता है
दुनिया के कुछ
रग बटोर लेने का
और मैं पूरी शक्ति से
बाहर निकल पड़ता हूँ
अभी नुककड़ तब ही आ पाता हूँ
कि सारा उत्साह
ठण्डा पड़ जाता है
और आँखा म
जो कुछ बसा था
सब लुप्त हो जाता है ।
दिखाई देती है
सिर्फ एक पनवाड़ी की दुकान ।
ऐसे म अकस्मात्
मुझ पर कोई हसता है
"बस इतनी ही है तुम्हारी ताकत ?"
पनवाड़ी से एक सिगरेट पीता हूँ
और मुझे लगता है
यही है बस मेरी
सबसे बड़ी उपलब्धि ।
इतने बीते दिनों को मैंने
जिया नहीं है
कीड़ा की तरह—माटी किया है

और आग भी इसी तरह
 १ जात बिजो दिन !
 तभी मेरे इस मिद
 एक भी उगी है
 एक एगी भा
 जिसकी शोली म
 एक भी गपता रही
 और जब म एक भी उपलब्धि !
 जिसे आग
 भावी भूग
 बफ की तरह नगी होकर
 नाच रही है बेताज
 मिला लम्बी
 चौड़ा ! चौड़ी !
 लेकिन भीतर का शैतान
 इस सानिध्य से प्राप्त
 सुग को भी
 भोगने नहीं देता अधिक् देर
 वह आकर मुझे फिर शिक्षा देता है
 किसी व
 मजिल की ओर बढ़ते
 खटा ख ट
 करते पाव
 सुख को पीत हाठ !
 जिह् देव मेरी नींद उड जाती है
 और मैं दौडने लगता हूँ—शहर के बाहर
 खुली सड़वा पर
 ताकि इस भीड को छोड कर
 एक और भीड मे जा सकूँ !

आदमी

उनके लिए आदमी
यह आदमी नहीं होता जो
एक जोड़ी आँखें, एक जोड़ी हाथ
और एक जोड़ी पाँव रखता है
जिसके घर बीबी बच्चे होते हैं
बुढ़ा माँ बाप होते हैं
जिसके व्याह्न नायक बहन होती है
जो बीमार बेमार और लाचार होता है
जिसके आवास की समस्या है
रोटी की समस्या है
जो सारे दिन खपता है
जिसे डाकुआ का भय सताता है
जिसके दुश्मन हैं—मित्र हैं
उनके लिए चाहे कोई धना सेठ है
या गजू तेली
चाहे कोई शोषण करता है या करवाता है
चाहे लेता है या बक्ता
इसकी उह कोई पहचान नहीं है
उनके लिए तो आदमी—एक मुर्गी है
जो हर पाँच साल बाद
उनके लिए एक
सोने का अडा दती है
कभी-कभी यह अडा वे इस मुर्गी से
पाँच साल से पहले भी
गिरवा लेते हैं ।

मेने देखा है

दूसर ब्यथहया को बलन की
जिम्मेवारी
हम जिा बाधा पर
हालते र है
उनक यही मैने देखा है
दोर और बकरी
दोना दूकत है
दुके भी क्या न ?
दोर उनकी जात है
और बकरी उनकी औकात
लेकिन उहाने सदा ही
अपनी औकात को
भुलाया है
जात को बचाया है ।

यह अस्वस्थ हवा

हर सुबह
अगली सुबह सी नहीं होती
हर क्षण
नया दद उग आता है
गीत कैसे गाए ?
और फिर इन पक्तियों में
कितना हृदय रीतता है ।
एक पल ही तो बीतता है
बड़ी अजीब बात है
कायरत रहते हुए भी
मैं शक्ति हो उठता हूँ
इसकी उपयोगिता पर
और थकावट से नहीं
यू ही अपने को
बोझिल सा महसूसता हूँ ।
यू तो घटती ही रहती हैं
घटनाएँ दुघटनाएँ
पर एक बडबी मन स्थिति
जीवन बनने पर ही तुल आई है
दिनचर्या के सिवाय
दोष निणय जो रेंगते हैं
मस्तिष्क में

—

उठ पूरा करती थी अपना
 स्थिति करती है
 मुट्ठियों ताकत गुन जाती है
 गम हुआ था
 ठंडा पत्र जाता है अपना आप
 पत्रागार में
 न था मकान था गम तो
 भूलगा प्रियर-चार में
 वही-वही गतती है
 स्वस्थ हवा
 मुझे कुछ जान नहीं
 तू ग
 झुलसा हुआ मैं
 बरस बरस में
 अतिम अहसास की
 पल्पना किए था रहा है
 अब मर अन्त
 न नपातिया जीवित है
 न गांधी
 आशों व हवाई मिले भी
 मैंने
 बच्ची उमर तक ही बनाए थे
 अगर कुछ परिस्थितियाँ
 करा ही द मुझे
 स्वस्थ हवाओं के
 जल्दी लौट जाने का अहसास
 तो बीच ही में आ ही जाती है
 अस्थायी नौकरी
 बुढ़े माता पिता
 छोटा भाई
 जिसकी छूट गई पढ़ाई
 बचत जो भ्रष्टपन में बीता
 या सुख जो छूट गए
 या बीसा पन जिनके

जवाब नहीं आए
और फूट पड़ता है
होठों का एक छाला
जिससे फैल जाता है
कड़वा तरल सारे मुह में
इसी तरह यह अस्वस्थ हवा
रुक कर भी नहीं रुकती

एक और महाप्रलय

न बता सक्ते का तो
 एष बहाना मात्र है
 ये स मुझे साफ-साफ पता है
 यह मेरा भविष्य का
 जो मुझे यहां डबल गया है
 जहां मुझे लगता है
 भारदीय मोनसून धूप बिगेरता मूरज भी
 गद के बाटला में छुपा है,
 शनता फिरता हू
 फिर भी लगता है
 पगु हू
 यह बंसी प्रलय है ?
 तमाम वस्तियाँ, पथ्वी
 और नर-नारी
 फु ५५५५२ से
 कही उड़ गए हैं
 है तो बस
 अनिश्चय की सीटिया बजाता हुआ
 हवाओं का खालीपन
 दिशाहीन आकाश
 और जगह-जगह उमड़ते
 घुटन, खीझ, अतृप्ति
 और असतोष के बादल
 जिनसे बरसता है
 हर वक्त

आदमी को तडपा देने वाला—जल
 वैसे इस प्रलय मे
 सब जगह जल ही जल न होकर
 हो गया है
 कीचड़ ही कीचड़
 जो मेरे गले तक आ गया है
 जिसमे मैं
 मारता हुआ हाथ पैर
 जाता हूँ
 कभी इधर, कभी उधर ।
 इस सब मे भी
 हाथ ! मैं टूटा नहीं हूँ
 शायद मुझ मे नव सृष्टि का
 प्रथम मानव बनने की लालसा
 मरी नहीं है
 हा !
 वैसे यह ठीक भी है
 मनु को भी
 यूँ ही डराने लगा था एक दिन
 हवाआ का खालीपन
 दिशाहीन आकाश
 परतु वह टूटा नहीं था
 तभी तो कहला गया
 सृष्टि का प्रथम मानव
 तो क्या मुझे भी
 इडा और अद्धा मिलेगी
 हा ! हा !
 क्या इस प्रलय के बाद भी
 नव सृष्टि तिलेगी ?

किसी एक दिन

अत तक
यू ही मोचता रहेगा
छाती को विषाद
मस्तिष्क की शक्ति की
अन्तिम इकाइयों को
यू ही खाती रहेगी
सी सी बिताए !
और किसी एक दिन मैं
चलने लगूंगा महा से
यू ही
करने के लिए
बहुत कुछ छोड़ कर
क्या कर जाऊंगा मे ?
दुहरा जाऊंगा
असफलता और बेबसी की
कई-कई कहानियां,
इस समयावधि में
युग के इतिहास का
एक और पृष्ठ बड़ेगा
लेकिन ऐसा क्या है ?
जो अपने योगदान का भी आभास देगा !
फिर भी मन को अगर
हो गया यह स्वीकार
कि आदमी की शक्ति
इतनी ही होती है

तो मेरा मरणासन
 सुखान्त होगा
 नहीं तो एक
 लम्बी कृतज्ञ बेहाशी ही आएगी काम
 निकालने के लिए प्राण,
 उस दिन
 मेरा आगन कुछ देर के लिए
 होगा उदास
 सब से अधिक दुःख होगा
 इस कैंटर को
 ये बबूल के पत्ते बेचारे
 करेंगे
 लाश को ढाप लेने का
 असफल सा प्रयास ।
 क्या सीखेगा कोई
 मेरी इस मृत्यु से ?
 मैंने भी तो कभी कुछ नहीं सीखा
 (लाश के डैरो से)
 इसके डर से मैं
 कब रसे है जल्दी-जल्दी पाव
 कब छोड़ा है मैंने
 छाना-पीना-सोना
 और प्यार को तलाशना
 पसीना हो पसीना बहाया है
 कहां बहाया है, धून ।
 कितने दिन रहे हैं
 मेरे साधारण ।
 मेरे बाद भी
 यूँ ही आती रहेगी
 हर आनाशवाणी से
 गुद की खबरें,
 यूँ ही दिन उगगा
 और लोगो के पेट में दद ।
 सूप यूँ ही डूबेगा

लिए सग हर आस्था का मन ।
 रातें यू ही लम्बी होगी
 लोग पीते रहेंगे
 शराब
 या खाते रहेंगे
 एल० अस० डी० की गोलिया
 झुठलाते रहेंगे
 अपने होने के सत्य को
 कोई नपुंसक
 बेचता फिरेगा
 अपनी बीबी या बहन को
 होटलो में ।
 गिनाने में कहा पूरा आऊंगा
 प्यारा और खारा
 सब कुछ ही चलता रहेगा
 मरण की तैयारी करता रहेगा ।

मैं छुद ही
 या सनीचर
 कौन था जिसने मुझे आज तक
 सिफ सपने ही सपने दिखाए
 और लाकर पटक दिया
 बेकारी और बीमारी के बीच में
 लेकिन मैं किसी से
 कुछ भी नहीं कहूँगा
 चुपचाप सब सहूँगा
 कहने का समय भी कहा है ?
 समय तो है उनका
 जो छपवा रहे हैं धोपणा-पत्र
 जो उछाल रहे हैं आश्वासन
 या उनके लिए
 जिनके लिए जीवन है
 सिफ बोटी और कोठी
 और उन लोग का भी
 जिनके लिए जरूरी था
 हमारा पराजित हो जाना ।

यही चाहिए था

यही चाहिए था मेरे लिए
यू ही लटकना बीच में
और रँगना कीच में
कुछ न कुछ तो सजा मिलनी ही
चाहिए थी
दीन हीन होते हुए भी
प्रेमी, महान और धनवान बनने का
सपना देखने की
ययाशक्ति प्रयास करने की
मैं ही तो था वह
जिसे डर था
जल्दी बहुत जल्दी
सारे रास्ते खुल जाने का
सारे अभाव धुल जाने का

मेरे बचाव के लिए
 कोई नहीं आता
 रिश्ते मेरे लिए नहीं
 रिश्ते के लिए
 मैं हूँ
 बाप बल्लम लेकर
 मारने को दौड़ता है
 माँ चुप रहती है
 हिऽऽऽऽस ।
 बेटे से माँ को
 इतना डर लगता है
 रात को नी बजने पर
 जब आकाशवाणी कहती है
 'अब सामाचार समाप्त हुए'
 तब मैं बड़बड़ाता हूँ
 'नहीं, नहीं,
 अभी एक खबर और ।'
 लेकिन मेरी आवाज शून्य में
 विलीन हो जाती है
 और मैं पेट में
 जगह जगह
 गाँठें ही गाँठें महसूस करता हूँ
 उस सूत की
 जो कि मैं दिन भर
 खाता हूँ !

स्वभाव

जरूरी नहीं है कि
हर ऊँची दुकान में
फीका पकवान हो
और हर नीची दुकान में
मीठा पकवान हो
लेकिन मैं फिर भी
हर बार ही
नीची दुकान पर जाता हूँ
क्योंकि मुझे पता है
यह किसी अघाये हुए आदमी की
दुकान नहीं है !

खेल ! मेरे बेटे ! खेल !

खेल ! मेरे बेटे ! खेल !
टूटी हुई चम्मच
और फूटी हुई थाली से खेल !
चहकती बिड़िया मे बहला अपना मन
तेरे खेलने तो
चुरा ले गए
मकान मालिक के बच्चे !
खेल ! मेरे बेटे ! खेल !
भूखे पेट ही खेल
तेरा दूध पी गए
मुझे नीकरी दिलाने का
झासा देने वाले बिचोलिए
सीख ! मेरे बच्चे ! सीख !
तिनको के सहारे चलना सीख !
तेरा 'रेहडू' तो
खिसक गया मेरी जेब से
टिकट खरीदते वक्त
मुसाफिरखाने की भीड़ मे
खेल !

यह नहीं चलेगा

इस तरह
कितने दिन चलेगा प्यारे
कि हम अपनी रचनाओं में तो
मृत्यु की
महत्ता झाड़ें
और उन्हें अपनी व्यक्तिगत
जिन्दगी में न उतारें
यह नहीं चलेगा प्यारे
कि हम अपनी रचनाएँ तो
जनता से जोड़ें
और जनता में स्वयं जुड़ने के नाम पर
नाम भी सिखा दें !

आजकल

व धै
जि-होने
उचका उचका कर उ हे
इतना ऊचा उठाया
और ससद मे ले जा बिठाया
वे आजकल
असहाय से
झूल रहे हैं
सपने जो जगाए थे उ-हाने
भूल रहे हैं ।

एक बार फिर

बाहर तो निकलते हैं
और उड़ते भी हैं
शांति के कपोत
मुक्ति प्रिय चिड़िया
लेकिन एक बार फिर इहे
कही दूर
आकाश में उड़ रही
चीलो का भय
सताने लगा है
यह ठीक है कि
पिछली बार
आकाश जैसा था
वैसा ही रहा
वे इसमें कोई
सुनहरा रंग नहीं भर पाये
लेकिन इन शांति कपोतो
और मुक्ति प्रिय चिड़ियों को
ऊंचे कहीं उड़ रही
चीलो का तो
आभास मात्र ही नहीं था ।

एक बार फिर

बाहर तो निकलते है
और उड़ते भी हैं
शांति के कपोत
मुक्ति प्रिय चिड़िया
लेकिन एक बार फिर इन्हें
वही दूर
आकाश में उड़ रही
चीन्तो का भय
सताने लगा है
यह ठीक है कि
पिछली बार
आकाश जैसा था
वैसा ही रहा
वे इसमें बोई
मुहुरा रंग नहीं भर पाये
लेकिन इन शांति कपोतों
और मुक्ति प्रिय चिड़ियों को
ऊँचे नहीं उड़ रही
चीन्ता का तो
आभास मात्र ही नहीं था ।

यश-धीज

गांव में
बगई घर भूमि ओगते
मेरे बाग १ पड़ावा निघावा मुने
म उम्मीद म कि एक दिन
मह तो गोपण म मुक्त हो जाणन
मेकिन कहत म भावर
नौकरी मगा तो बटुन म सोद
मरी बगई म म भी
बहव हिममा बटान मग
ओर मेरे पाग
गांव म पाव करले
गा-बाग के पाग भेजने व दिन
बधा
माय दुल्ला मा मंगोन
वि है—उरका बेठा
मरबारी मोरुन म ह
बरा अंग मुला की मग
कामद करत म बटन का मुन भी
हम हगन ५
" ही हर " ही मगता है ?

नन्हें मजूर

छोटे छोटे बच्चे
बड़े बड़े काम करते हैं
लेकिन वे उन्हें
पैसे बहुत थोड़े दते हैं
ऐसे ही एक बच्चे को
जब मैंने टोका कि
तुम्हारा मेहनताना बहुत थोड़ा है
तो वह तपाक से बोला—
ज्यादा लालच अच्छा नहीं होता
ऐसी बातें उन्हें कौन सिखाता है
ऐसी बातें उन्हें
उनसे काम लेने वाले सिखाते हैं
और उनके बाप
इस सफेद झूठ पर
सत्य की मुहर चिपकाते हैं
जो उनकी कमाई को
ऊपर की कमाई मानकर
बड़े मजे से दारु में
लुटाते हैं।

एक भूमिहीन की दयया

जली बड़ी घरती पर
कोई गेग नहीं मरा
त्रिममे में
को दूँ कुछ दाने
और उग पड़े
महमहराती
पमत
त्रिम दल बर
तिसगा रर मरा
गूला मन
लेकिन गुना है
जग दल म
धोपरी, ठाकुर
और मटा ब
कुने, बिन्नी
और बिदिरो ब माम भी
गेग है !

फिर वही

फिर वही पोस्टर
वही झण्डे
वही आश्वासन
पार्टिया
गठजोड़
वही रस्ता वस्ती
वही का वही है
सब कुछ
सिवाय
कुछ लोगों के
जो इस धिनीने सिलसिले
के विरोध में
लगा रहे हैं आवाजें लगातार

लोगों की तीन हसजताएँ

आधुनिकता
दोस्त
रेस्तरा
खूब खूब
ग्राहकों के आगे
थोड़ा और
बोल जाएंगे
थूठ

कपट
तनाव
थकावट
उदासी
अब
थोड़ी सी
मिल जाए शराब तो
मजा ही मजा है
खूब ।

रात
घातुक्षय
सुबह आलस्य
उबासिया
चाय का प्याला पीकर
जवान होती
पीढ़ियाँ

होने की विवशता

हर वक्त
सम्भावनाओं का बड़ा सा द्वार
वही मैं
इस अधेरी राह में
कहा खो गया हूँ !
हाय, मैं महानगर हो गया हूँ !

एष चित्र

आकाश मे

सारे आकाश मे
भर गया
रेन की नीव के बाद का पानी ।
जिस म
तैरता है सूरज
बिना दिखाई दिए ।
हम धरती के लोग
कसे जिए ?

यह सब

तेतीस वर्षों से
समूचे देश पर
कुडली मारे बैठा है
एक परिवार
और दिना-दिन
अधिक मजबूत होती जा रही है
उसकी पकड़
इसीलिए कई कमजोर दिल वाले
राजनीतिज्ञ
अलगाव में ही ढूँढने लगे हैं
अपना भविष्य
इस देश की जनता भी
बया खूब है
सिफ एक बार को छोड़कर
उठोने काटी है सदा ही
एक ही पार्टी की फसल
जबकि वे खूब जानते हैं
एक ही एक फसल
लगातार बोने से
घरती किस तरह से
बाझ होती चली जाती है
और कम होता चला जाता है
उत्तरोत्तर फसल का झाड़ ।
किस कदर उल्टा पड़ा है
यह लोकतन्त्री मौसम कि

बसत

फूलो ।
बढ़ती उमर के कई चेहरो ॥
और
और भी बहुत सी जगह है
वहाँ बसत है
मेरी उमर और स्थिति
देखते हुए
मेरे पास भी
बसत होना चाहिए
लेकिन नहीं है
इसकी वजह
केवल एक ही है
कि मुझे उन सब
चेहरो का पता है
जहाँ बसत नहीं है
और वे चेहरे
मेरे बहुत निकट हैं ।

विटम्बना और विटम्बना

भूष
और विताआ वे मागे
इग दग व मागा को
मरने और जीन म
कोई भद मजर नहीं आता
मेबिग इग दग का
आ भी प्रधामंवी बनता है
मागा वे
जीवा की मुरसा चाहता है
गिर
विश्व ज्ञानि व विम
निष्कभीकरण
दा
परमाणु नहीं व
भार मदाता है ।

निम्न तबके की बस्ती

गाव के बाहर
झुगियो वाली बस्ती
रहती है सारा दिन उदास ।
काम करने लायक मद
पहुच जाते हैं भोर ही में
भूपतियो के खेतों में
औरतें और बच्चिया उठाती फिरती हैं
सवर्णों के घर गोबर
या फिर चुगती हैं मजदूरी पर
खेतों में कपास ।
शवास कास के मरीज
बुढ़े बुढ़िया खटिया में पड़े
उगलते हैं सारा दिन कफ
करते हैं फिकर
सोगों के खेत घर गयी
जवान बहु बेटियों की
सुबह से शाम तक सब जी खपते हैं
फिर भी कज नहीं छोड़ता पिण्ड
दिन फिर जाने की
नहीं जरा भी आस ।
बस्ती रहती है । सारा दिन उदास ।

आस्या

अजूबा

हरिजन
भूमिहीन मजूर मुजारो के वास म
हो रहा है सत्सग
लोग कर रह है—दया धम
त्याग तपस्या
आत्म सुधार की बातें
उधर कइ धनिक किसान पीकर शराब
कर रह हैं चिंतन—
फला मजूर मुजारे की
बेटी या बहू को
कैसे फासा जाए ?
सहसा उनकी छत पर
बोलती है कोचरी
शराबी चौधरी करता है
अपनी दुताली से एक फायर
ओर सनाटा छा जाता है
सारे वातावरण पर
कितना अजीब है
जिनकी अहिंसा
दया धम से
कुछ अथ निकलने वाला है।
वे तो इह अपना नहीं रहे हैं
और दूसरे फोकट मे
इन बाता पर
मत्था खपा रहे हैं ।

तुम्हारे भले तो

तुम्हारे भले तो
साग मंत्रे अच्छी है ना सामाही
हां भाई !
जिग तन साग या तन जान
दूजा क्या जान पीर पगई
तुम्हारी नहीं हूँ
जबो मगबना
म तुम्हारे घर बी
बिभी न दावार गिरा-

धक्का बस्ती

पट्टे वाली ज़मीन पर
(जो खरीदी न जा सकी)
पक्के मकान का
खाका दबा पड़ा रह गया
मेरे कागजा मे
और मैंने कस्बे की
धक्का बस्ती मे
अपना एक कच्चा घर
बना लिया है
फिलहाल
पत्नी को मैंने समझा दिया है
कि चलो हमने
पट्टे वाली ज़मीन पर
एक पक्के मकान का
सपना तो देख लिया
अधिकाश लोग तो
यह सपना भी नहीं देख सकते
जब बना रहा था
धक्का बस्ती मे
यह घर तो
हो रहा था अफसोस
कि रगीन बस्ती ने
धकेल दिया मुझे
इस उजाड़ में
जहा न रोगनी है न पानी

उस सरकारी बुलडोजर को
 वापस खदेड़ने में
 जो आएगा एक न एक दिन
 इस बस्ती को उजाड़ने, लेकिन
 उपजती वहाँ है लागा में
 इतनी सरलता से
 इतनी वशर्मी और
 इतनी ताकत
 फिर यहाँ डर भी तो है
 कच्ची गलियाँ का
 अंधेरे का
 प्यास का
 चोरो का
 वर्षा ऋतु में पानी भर जाने का भी
 इतना डर आदमी
 उस दिन ही लागेगा
 जिस दिन उसके सिर पर से
 पानी गुज़र जाएगा
 ठीक मेरी तरह
 उस दिन उस
 यह धक्का बस्ती
 उबार लेगी

फर्रुखा घर बर्खा के बाद

नया साल

कुछ भी तो नया नहीं होता
नये साल मे
न तो कुर्ता ही नया होता है
और न ही जूता
कुछ भी तो नहीं बदलता
सिवाय एक् कलेण्डर के
वही रहता है पेशा
वही अफसर होते हैं
और बडी मातहत
न तो सत्तासीन बदलते हैं
और न ही परजा
वैसे का वैसे ही रहता है
मौसम ।

भ्रांति कथा

‘अ’ दिल्ली में रहता है
लागा में दूर
लोगों को उनके आय के स्रोत
ज्ञान नहीं हो सकते
वह आसानी से उनके आगे
गरीब बन सकता है
लेकिन लोग से
‘अ’ के उन समर्थकों की
(जो मंत्री बनते हैं / सासद
विधायक बनते हैं)
आय के स्रोत तो छुपे हुए नहीं हैं
ये तो उनके ही बीच रहते हैं
अधिकांश लोग ने तो
ताजमहल को भी मात करती
इनकी कोठी को
अपने हाथ में बनाया सजाया है
कितनों ने ही इनके
मील भर लम्बे चौड़े फ़ास में
काम किया है
जिसमें फल और फसलें
दोनों ही भरपूर होती हैं
लोग यह भी जानते हैं कि
इन सब की शहरों में दुकानें हैं
मिलें हैं
फिर भी ‘अ’ जब

भूगे मरते / गये सडे /

धसी आँगा घाने

और जयने बाहर का दिक्के

गवदबुगे मे आदमिया व आग

मह भाषण दना है कि

मे सुम्हारी गरीबी दूर कर दूगा

तो लोग क्यू

गहज म ही

—म पर विश्वास कर लेते है ?

व अ' म या क्यू नहीं

गुणते कि

दस वाक्य को गुनकर

कभी सुम्हारा मह अमीर समझ

गौरवा क्यू नहीं ?

मह वाक्य गुनकर

दमने भेद पर

हवाईया की जगह

खुशिया व म उड़ती है ।

कहा जगामे गरीबी दूर करत क ता ?

आप मारा मान मना

आराम म माना ?

अस्तित्व पूर्ण में

कैसे मान लूं
कि मैं हूँ अस्तित्वहीन
इतने बड़े ब्रह्मांड में
एक है मेरी धरती
धरती के कई देशों में है
मेरा एक देश
एक देश के कई प्रांतों में है
मेरा एक प्रांत
प्रांत के कई जिलों में है
मेरा एक जिला
और जिले के कई गांवों में
मेरा एक गांव
जिसमें मेरे नाम का
व्यक्ति सिर्फ मैं ही हूँ
यह भी कैसे मान लूं
कि मृत्यु के बाद
कुछ भी नहीं बचेगा मेरा
अगर यह धरती रही तो
कुछ न कुछ खशबू
बची ही रह जाएगी
जिसमें बिखेर जाऊंगा
मरी इस ज़िन्दगी में ।

गुस्से का कारण

पर मैं जब मुन्ना
बंटा तोट देता है
या मुन्नी टमाटर पीछे दती है
तो मेरे गुस्से में
भाग बढ़ता हो । का कारण
गिरने गिरने-दो गिरने का
मुकाम ही नहीं हाता
उमर बीत होती है
मरे हर जगह हारने
बस जान की
सीख ।

राम

राम वहाँ नहीं है
जहाँ जाकर तुम
घटिया खडलडात हो
राम था वहाँ
जहाँ कुछ अत्याचारिया के विरुद्ध
समूचा शहर उमड़ पड़ा था
बईया ने
इस अत्याचार के विरोध में
बिछाया था स्वयं को
राम आदमी म ही है
राम से भी तो तुम
यही चाहते हो कि दूध का दूध
और पानी का पानी हो
तो इसी / जतन में / मदिया से
लगा है आदमी
जिमका नतीजा है—
हमार य धाने तहसील
यायालय सर्वोच्च यायालय
और यू० एन० ओ०
यह ठीक है कि
आदमिया द्वारा निर्मित
इन संस्थाओं में चूक हा जाती है
लेकिन यह चूक सिर्फ
एसीलिए होती है कि
अभी तक ! प्रत्येक आदमी ने
अपने राम को जगाया नहीं है
और जगा भी लिया है ता
रावण के विरुद्ध लड़ाया नहा है ।

निष्ठा

तुम मुझ
एक को गोली से उड़ाओगे
तो दस और
उठ खड़े होंगे मेरे प्रतिरूप
उन दस को तुम
फासी पर लटकाओगे
तो उन प्रत्येक के पीछे
दस दस और सीना तान लेंगे
आखिरकार तुम तो
हक्के बक्के रह जाओगे
जब मुझे मार दिए जाने पर भी
मुझ जैसे हजारों
तुम्हें
ललकार रहे होंगे ।

सलहत जाग जाएगी तो

यथा स्थिति बनाए रखने वालो से

मैं अगर
किसी मिरफिरे की तरह यह कहूँ
कि आप
पाच साल तक
पूरी तरह चुप रहे
जब तक की लाजमी न हो
कोई आन्दोलन न करें
सत्तासीनो के खिलाफ
तो आप नहीं मानेंगे
क्योंकि आप को भी तो
आगे आना
अपने आप को चमकाना है
लेकिन दरसल आप
ऐसा करके उह
एक मौका और देंगे
लोगों की हमदर्दी लूटने का
और यह कहने का कि
हमें कुछ करने ही नहीं दिया गया
जब कि कुछ भी करने की
मशा उनकी स्वयं की ही नहीं है ।

अस्सी की उपलब्धि

सा ! ओर बनाओ रडिया
 सुनो किन्ना गीत कमट्री
 भन्ना नही पड़ेगी मुम्ह
 धन दा बट तब की पास
 मुम्हार जावन भ समीत नही तो क्या
 रडिया न ता है
 उत ही पोआ
 मुम्हें गलता नमोब गही हागा तो क्या
 कमट्री सुनो
 ओर बातें करो चिन्तादिया की
 सुन याता पर
 मुम्हार ध्यानातय बा
 धाव पड़ेगी ।
 (भल ही आप सारा गिन
 मटक नापन है)
 दसग क्या
 अहम् बात ता यह है कि
 आप किनट व प्रत्येक सिखाटी का
 नाम जानत हैं
 क्या जम्हरन है
 दश व राजनतिक गामाजिक
 और आधिक मुद्दा पर सिर पचाने की
 आप उम सरकार को/धन्यवाद क्या नही दे रहे हैं ।
 जिनने मुम्हारे रेडियो को
 दत्ता हल्का कर दिया है ।

गजब हो जाता

बालकानी म
गली म फकी गयी
उस राटी को उठान म
अगर वह लडका
एक पल भी लैट हो जाता
ता गजब हो जाता
उम झपट ले जाता
एक सूअर
और आत्मी के उम बच्चे की
अतडिया
न जान कितनी दर तक
बुल बुलाती रहती
आहार क लिए ।

अध-भक्ति

बिसी ममय
मेर दग म
साठ ब रोह
देवी-पता ये
सेविन आज
हम विशाल देश म
गम्भवत
एक ही देवी रह गयी है
अध भक्ति की भी मारो
बोई हृद होती है ।

समझदारी

तुम कहते हो कि
पढ़े लिखे भी
उनके 'फेवर' में जा रहे हैं
लेकिन कौन से पढ़े लिखे ?
जिन्होंने उनके द्वारा पढ़ाई गयी
किताब के सिवाय
दूसरी के हाथ ही नहीं लगाया
इसलिए
यह मत कहो कि
समझदारी सब मरा रही है
देखो ! वह
धीरे धीरे जा रही है ।

अब और उत्साह

गाफी गत लिए कागजा पर
आभा अब पाहा
रेत पर भी बनें
बहुत निया है
गाथातार और परिचय
बिनाबो को
आओ अब पोछा
सोगा ट भी
हिसें ! मिने !

लोगो ने

लोग जब सुख सुविधाओं के लिए
चिल्लाते हैं
तो तुम्हारा जबाब हाता है—
हमारे पास कोई
जादू की छड़ी नहीं है
(वैसे यह बात तो तुम भी
स्वीकारते होगे कि
तुम्हारे पास
अपने लिए
समाम ऐशो आराम जुटा लेने की
जादू की छड़ी अवश्य है।)
लेकिन लोग का
तुम्हारा यह जबाब सन्तोष नहीं देता
उ-हे विश्वास है कि
तुम्हारे पास
जादू की छड़ी जरूर है
तुम उसे प्रयोग में
नहीं ला रहे हो
इसलिए लोग ने
तुम्हारे सुख क्षेत्रों में
बारूदी मुरगें बिछा दी हैं।

भ्रम और चवनियत का भ्रूण

उमर पट में

भ्रम और चवनियत का भ्रूण पन रहा था

तेज का जीवन में परिचयित

होन में पहल हा, अर्थात्पन हा गया/

इस पर वह एक बार महम गई थी

उमर प्रतिद्वंद्वी अंगर चाहत ता

उमर पर म दुवरा -

इस भ्रूण पर था

मारी सम्भावनाएँ बाट सकत थे

सेबिर उहान पना नहीं बिया

ता वह एक बार फिर -

इस भ्रूण की मा हा गया है।

और उनकी (अपन प्रतिद्वंद्विया की)

विशाल हृदयता थी

नपुंसकता की मना द गी है

और गलत लोग के योग/अपने चेहरे का

अधिक म अधिक/चमका रही है।

मेरे दग ब लोग भी क्या खूब है

उह मारी सम्भावनाएँ

एक ही म/क्या नजर आती हैं?

क्या दग की दग मनी राख हैं।

पालन

सध्या के समय
गवालो की भेड़ें
घर लौटते हुए
मिमिया रही हैं
जैसे स्कूली बच्चे
समवित स्वर में
वणमाला का
उच्चरण कर रहे हैं।
गेहूँ और सरसों की
फूटती हुई
कोंपला पर
इस जानलेवा पतझड़ के पार
में माफ माफ
देख रहा हूँ
एक मुस्कराता हुआ
बसत !
सचमुच
परवरिश
कितनी बड़ी
चीज है ।



जन्म 1949

बेड़ दशक से लेखन
प्रारम्भ तो कविताओं से ही
फिर कहानी रिपोर्टाज
संस्मरण
सन्तु उपन्यास
और बालकथाएँ कविताएँ भी
रचनाकर्मों की जनक राज पारीक
के सानिध्य में
संघ पत्रिकाओं से जुड़ाव
अनेकानेक रचनाओं का प्रकाशन
बाल रचना की एक पुस्तक के बाद
पहला कविता संग्रह
"भूलसा हुआ मैं"
साहित्य के माध्यम से
समाज से सरोकार को
गहरा करते रहने का यत्न
शिक्षा विभाग, राजस्थान में
अध्यापन कार्य

सम्पर्क

द्वारा बसंतलाल हेमराज
पीलीबंगा—335803 (धीगगानगर)